कुमार जीवन - 78

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमार ग्रुप उठो। कुमारों का ग्रुप भी अच्छा है। कुमारों ने दिल में प्रतिज्ञा का पट्टा बांध लिया है, इन्होंने (कुमारियों ने) तो बाहर से भी बाँध लिया है। **प्रतिज्ञा का पट्टा बाँधा है कि सदा अर्थात निरंतर प्युरिटी की पर्सनाल्टी में रहने वाले कुमार हैं।** ऐसे हैं? बोलो, जी हाँ। ना जी या हाँ जी? या वहाँ जाकर पत्र लिखेंगे थोड़ा- थोड़ा ढीला हो गया! ऐसे नहीं करना। **जब तक ब्राह्मण जीवन में जीना है तब तक सम्पूर्ण पवित्र रहना ही है।** ऐसा वायदा है? पक्का वायदा है तो हाथ हिलाओ। टी.वी. में आपके फोटो निकल रहे हैं। जो ढीला होगा ना उसको यह चित्र भेजेंगे। इसलिए ढीला नहीं होना, पक्का रहना। हाँ पक्के हैं, पाण्डव तो पक्के होते हैं। पक्के पाण्डव, बहुत अच्छा।

➳ _ ➳ प्युरिटी की वृत्ति है - शुभ भावना, शुभ कामना। **कोई कैसा भी हो लेकिन पवित्र वृत्ति अर्थात शुभ भावना, शुभ कामना और पवित्र दृष्टि अर्थात सदा हर एक को आत्मिक रूप में देखना वा फरिश्ता रूप में देखना।** तो वृत्ति, दृष्टि और तीसरा है कृति अर्थात कर्म में, तो कर्म में भी **सदा हर आत्मा को सुख देना और सुख लेना।** यह है प्युरिटीकी निशानी। वृत्ति, दृष्टि और कृति तीनों में यह धारणा हो। कोई क्या भी करता है, दु:ख भी देता है, इन्सल्ट भी करता है, लेकिन **हमारा कर्तव्य क्या है? क्या दु:ख देने वाले को फालो करना है या बापदादा को फालो करना है?** फालो फादर है ना! तो ब्रह्मा बाप ने दु:ख दिया वा सुख दिया? सुख दिया ना! तो आप मास्टर ब्रह्मा अर्थात ब्राह्मण आत्माओं को क्या करना है? कोई दु:ख देवे तो आप क्या करेंगे? दु:ख देंगे? नहीं देंगे? बहुत दु:ख देवे तो? बहुत गाली देवे, बहुत इन्सल्ट करे, तो थोडा तो फील करेंगे या नहीं? कुमारियाँ फील करेंगी? थोडा। तो फालो फादर। यह **सोचो मेरा कर्तव्य क्या है! उसका कर्तव्य देख अपना कर्तव्य नहीं भूलो।**

➳ _ ➳ वह गाली दे रहा है, **आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ। आपकी सहनशीलता से गाली देने वाले भी आपको गले लगायेंगे।** सहनशीलता में इतनी शक्ति है, लेकिन थोडा समय सहन करना पड़ता है। तो सहनशीलता के देव वा देवियाँ हो ना? सदा यही स्मृति में रखो - मैं सहनशीलता का देवता हूँ, मैं सहनशीलता की देवी हूँ। तो देवता अर्थात देने वाला दाता, कोई गाली देता है, रिस्पेक्ट नहीं करना है तो किचड़ा है ना कि अच्छी चीज है? तो आप लेते क्यों हो? किचड़ा लिया जाता है क्या? कोई आपको किचडा देवे तो आप लेंगे? नहीं लेंगे ना। तो रिस्पेक्ट नहीं करता, इन्सल्ट करता, गाली देता, आपको डिस्टर्ब करता, तो यह क्या है? अच्छी चीजें हैं। फिर आप क्यों लेते हो? थोड़ा-थोड़ा तो ले लेते हो, पीछे सोचते हो नहीं लेना था। तो अभी लेना नहीं। **लेना अर्थात मन में धारण करना, फील करना।**

➳ _ ➳ **तो अपने अनादिकाल, आदिकाल, मध्यकाल, संगमकाल, सारे कल्प के प्युरिटी की रॉयल्टी, पर्सनालिटी याद करो।** कोई क्या भी करे आपकी पर्सनालिटी को कोई छीन नहीं सकता। यह रूहानी नशा है ना? और डबल फारेनर्स को तो डबल नशा है ना! सब बात का डबल नशा। प्युरिटी का भी डबल नशा, सहनशील देवी-देवता बनने का भी डबल नशा। है ना डबल? सिर्फ अमर रहना। अमरभव का वरदान कभी नहीं भूलना।

(25-10-2002)

➢➢ बाबा ने मुख्य रूप से 3 बातों की तरफ ध्यान खिंचवाया है :-

➳ _ ➳ पवित्र वृत्ति

→ कोई कैसी भी आत्मा हो... सदैव उसके प्रति शुभ भावना रखना

→ किसी शायर ने क्या खूब कहा है

- मुझसे नफरत अगर करनी है तो
- इरादे मज़बूत रखना
- क्योंकि ज़रा भी अगर चूक हुई तो
- मोहब्बत हो जायेगी

➳ _ ➳ पवित्र दृष्टि

→ सदा हर एक को आत्मिक स्वरुप व फ़रिश्ता स्वरुप में देखना

➳ _ ➳ पवित्र कृत्ति

→ सदा हर आत्मा को सुख देना व लेना

➢➢ सहनशीलता

➳ _ ➳ सहन करने से आत्मा में बल भरता है

➳ _ ➳ मुझे सहन करना है

→ क्योंकि यह स्वयं भगवान की आज्ञा है

→ बेईज्ज़ती को सहन करना सबसे मुश्किल कार्य है

- इसके लिए बहुत शक्ति चाहिए

➳ _ ➳ सहनशीलता की 2 Stages

→ 1st Stage

- इसमें यह भाव होता है की :- मैं सहन कर रहा हूँ
- जिसकी वजह से सहन करना पड़ना रहा है... उसके प्रति क्रोध का भाव होता है..

→ 2nd Stage

- सब कुछ सहन करने के बाद भी चुपचाप ... जैसे की कुछ हो ही नहीं रहा है
- जीवन को फिर भी Enjoy करना ...
- जिसकी वजह से सहन करना पड़ना रहा है... उसके प्रति भी शुभ भावना...
- किसी के प्रति कोई Complaint नहीं